भारतीय कला एवं संस्कृति

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

भारतीय स्थापत्य *(Indian Architecture)*

भारतीय वास्तुकला की विशेषताओं को निम्नलिखित कालों में बाँटकर देखा जा सकता है:

सैंधव वास्तुकला *(Indus Architecture)*

- सैंधव कला उपयोगितामूलक थी। सिंधु सभ्यता की सबसे प्रभावशाली विशेषता उसकी नगर निर्माण योजना एवं जल-मल निकास प्रणाली थी।
- सिंधु सभ्यता की नगर योजना में दुर्ग योजना, स्नानागार, अन्नागार गोदीवाड़ा, वाणिज्यिक परिसर आदि महत्त्वपूर्ण हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के समस्त नगर आयताकार खंड में विभाजित थे जहाँ सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। इसे ग्रिड प्लानिंग कहा जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरीय क्षेत्र के दो हिस्से थे- पश्चिमी टीला (Upper town) और पूर्वी टीला (Lower town)।
- पश्चिमी टीला पूर्वी टीला की अपेक्षा ज़्यादा ऊँचाई पर बसा था तथा यह दुर्गीकृत (Fortified) होता था।
- हड़प्पा काल में भवनों में पक्की और निश्चित आकार की ईंटों के प्रयोग के अलावा लकड़ी और पत्थर का भी प्रयोग होता था।
- बरामदा घर के बीचों-बीच बनाया जाता था और मुख्य द्वार हमेशा घर के पीछे खुलता था।
- घर के गंदे पानी की निकासी के लिये ढकी हुई नालियाँ बनाई गईं और इन्हें मुख्य नाले से जोड़कर गंदे पानी की निकासी की जाती थी।
- जल-आपूर्ति व्यवस्था का साक्ष्य 'धौलावीरा' से मिला है जहाँ वर्षा जल को शुद्ध कर उसकी आपूर्ति की जाती थी।
- हड़प्पा सभ्यता में दोमंजिला भवन हैं, सीढ़ियाँ हैं, पक्की-कच्ची ईंटों का इस्तेमाल है किंतु गोलाकार स्तंभ और घर में खिड़की का चलन नहीं है।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों में कहीं भी मंदिर का स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला।
- हड़प्पा से प्राप्त विशाल अन्नागार, मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार ($39 \times 23 \times 8$ फुट), अन्नागार व सभा भवन परिसर तथा लोथल (गुजरात) से प्राप्त व्यावसायिक क्षेत्र परिसर और विशालतम गोदीवाड़ा हड़प्पा सभ्यता की नगर निर्माण योजना के उत्कृष्ट नमूने हैं।
- हड़प्पा सभ्यता (2750-1700 B.C.) में स्थापत्य/वास्तुकला ने जो ऊँचाई प्राप्त की थी वह वैदिक काल (1500-600 B.C.) तक आते-आते समाप्त हो चुकी थी। अत: वैदिक काल स्थापत्य कला की दृष्टि से ह्रास का काल है।
- वैदिकोत्तर काल के दो महत्त्वपूर्ण अवशेष हैं- बिहार में राजगृह शहर की किलाबंदी (6-5वीं ईसा पूर्व) तथा प्राचीन कलिंगनगर की किलाबंद राजधानी (ईसा पूर्व 2-1 शताब्दी)।
- राजगृह में एक पत्थर के ऊपर दूसरे पत्थर रखे गए हैं जबकि शिशुपालगढ़ में बड़े-बड़े पत्थरों से किले का प्रवेश द्वार बनाया गया जिसे कब्जों पर हिलने वाले दरवाज़ों की सहायता से बंद किया जा सकता था।
- अशोक के काल में संगतराशी और पत्थर पर नक्काशी फारस की देन थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य का महल समकालीन 'सूसा' साम्राज्य के प्रासाद को भी मात करता है।
- पाटलिपुत्र में एक विशाल इमारती लकड़ी की दीवार के अवशेष मिले हैं जिससे राजधानी को घेरा गया था।
- मौर्यकालीन स्तंभ आज भी कला के उत्कृष्ट नमूने हैं जिसमें सारनाथ का स्तंभ सबसे विशिष्ट है।
- इन स्तंभों पर एक खास तरह की पॉलिश 'ओप' की गई थी जिससे इनकी चमक धातु जैसी हो गई। किंतु पॉलिश की यह कला समाज के साथ लुप्त हो गई।

बौद्ध वास्तुकला *(Buddhist Architecture)*

- गुफा, चैत्य, स्तूप, विहार आदि बौद्ध वास्तुकला के अंतर्गत आते हैं।
- प्रारंभिक गुफा, वास्तुकला का एक विशिष्ट उदाहरण है। बिहार की बराबर पहाड़ियों में लोमस ऋषि गुफा जिसका सर्वाधिक बार काल निर्धारण किया गया है, विशिष्ट है।
- अशोक महान ने बराबर पहाड़ी में चार गुफाएँ लोमस ऋषि, सुदामा गुफा, कणचौपोर और विश्व झोपड़ी गुफा जबकि अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ी में तीन गुफाओं का निर्माण आजीवकों हेतु करवाया।
- मौर्योत्तर काल में पुणे जिले (महाराष्ट्र) में 'कार्ले' में एक अन्य गुफा का उत्खनन किया गया जिसमें एक विशाल प्रार्थना कक्ष या चैत्य सामने आया।
- कार्ले की मेहराबी छतों पर लकड़ी की असली कड़ियाँ डाली गई हैं तथा बृहदाकार स्तंभों के शीर्ष पर मूर्तियाँ बनाई गई हैं।
- चैत्य एक प्रार्थना हॉल या सभा स्थल है जबकि स्तूप समाधिनुमा भवन जिसमें बौद्ध धर्म के पवित्र व्यक्ति की अस्थियाँ आदि रखी जाती हैं।
- भाज (पुणे जिला) की गुफाओं से प्राप्त चैत्य हॉल उल्लेखनीय है।
- हर्मिका, मेधि तथा वेदिका आदि स्तूप स्थापत्य से जुड़े शब्द हैं।
- अधिकतम अशोककालीन स्तूप विनष्ट हो चुके हैं किंतु सारनाथ की एकाश्म वेदिका, तक्षशिला की वेदिका के साथ-साथ कोनकमन स्तूप, साँची स्तूप, भरहुत स्तूप आदि महत्त्वपूर्ण हैं।
- मौर्यकाल में जिस शैल उत्कीर्णन के कुछ उदाहरण मिले उसका अत्यधिक विकास शुंग-सातवाहन काल में देखने को मिलता है।
- शुंग शासकों ने ब्राह्मण मतावलंबी होते हुए भी भरहुत, साँची (दोनों मध्य प्रदेश) तथा बोधगया (बिहार) में स्तूप निर्माण में सहयोग किया है।
- कुषाण शासकों में सबसे उत्साही बौद्ध मतावलंबी कनिष्क प्रथम ने उत्तर पश्चिम पंजाब व सिन्ध की ओर अनेक स्तूप का निर्माण करवाया यथा-चारसद्दा स्तूप (पाकिस्तान), मणिक्याला स्तूप (पाकिस्तान), तक्षशिला स्तूप, सूई विहार स्तूप।
- फाह्यान एवं ह्वेनसांग के विवरणों से पता चलता है कि कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) में 400 फीट ऊँचा स्तूप बनवाया था।
- दक्कन में सातवाहन शासकों ने भी बड़ी संख्या में स्तूप, चैत्य, विहार बनवाए जैसे- अमरावती स्तूप, नागार्जुन कोंडा स्तूप, कार्ले चैत्य, गुड्डीवाडा स्तूप, जगईपेट स्तूप, भक्तप्रेलू स्तूप आदि।
- महाराष्ट्र के लोनावाला इलाके में सहयाद्री की पहाड़ियों में कार्ले, भाज, अजंता आदि जगहों पर कला के नए स्वरूप पल्लवित हुए जिसे 'रॉक कट आर्किटेक्चर' कहते हैं, जैसे पहाड़ को काटकर ही मंदिर-चैत्य, स्तूप बनाना।
- भाज की गुफाओं में निर्मित चैत्य एवं विहार तथा जल संग्रहण का तरीका उत्कृष्ट स्थापत्य का नमूना है।
- पुणे के निकटवर्ती जिले औरंगाबाद में अजंता है जिसमें कुल 29 गुफाएँ हैं। इसमें चार चैत्य और 25 विहार हैं।
- अजंता की गुफाओं में सबसे प्राचीन है गुफा संख्या दस।
- अजंता से दक्षिण-पश्चिम में 50 मील दूर सातमाला की पहाड़ियों में पीतलखोड़ा की गुफाएँ मिली हैं जहाँ चैत्य में लकड़ी का प्रयोग किया गया था।
- हिन्दू मतावलंबी होते हुए भी गुप्त शासकों ने बौद्ध कला में रुकावट की जगह सहयोग किया तथा स्तूप निर्माण में नक्काशीदार ईंटों का प्रयोग करवाया।
- गुप्तकाल के दो प्रमुख स्तूप सारनाथ में धमेख स्तूप और राजगीर में बना जरासंध की बैठक का स्तूप (पिप्पाला गुफा) प्रसिद्ध है।

मंदिर वास्तुकला *(Temple Architecture)*

- मंदिर निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ तो मौर्यकाल से ही शुरू हो गया था किंतु आगे चलकर उसमें सुधार हुआ और गुप्तकाल को मंदिरों की विशेषताओं से लैस देखा जाता है।
- संरचनात्मक मंदिरों के अलावा एक अन्य प्रकार के मंदिर थे जो चट्टानों को काटकर बनाए गए थे। इनमें प्रमुख है महाबलिपुरम का रथ-मंडप जो 5वीं शताब्दी का है।
- गुप्तकालीन मंदिर आकार में बेहद छोटे हैं- एक वर्गाकार चबूतरा (ईंट का) है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ी है तथा बीच में चौकोर कोठरी है जो गर्भगृह का काम करती है।
- कोठरी की छत भी सपाट है व अलग से कोई प्रदक्षिणा पथ भी नहीं है।

क्र.सं.	मंदिर	स्थल	कालखंड
1.	गोलाकार ईंट व इमारती लकड़ी का मंदिर	बैराट जिला राजस्थान	तृतीय शताब्दी ईसापूर्व
2.	साँची का मंदिर-40	साँची (मध्य प्रदेश)	तृतीय शताब्दी ईसापूर्व
3.	साँची का मंदिर-18	साँची (मध्य प्रदेश)	द्वितीय शताब्दी ईसापूर्व
4.	प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	चौथी शताब्दी ईसापूर्व
5.	साँची का मंदिर-17	साँची (मध्य प्रदेश)	चौथी सदी
6.	लड़खन मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	पाँचवीं सदी ईस्वी सन्
7.	दुर्गा मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	550 ई. सन्

- इस प्रारंभिक दौर के निम्नलिखित मंदिर हैं जो भारत के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर हैं: तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, म.प्र.), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, म.प्र.), नचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना, म.प्र.), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, यू.पी.), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, यू.पी.) आदि।
- मंदिर स्थापत्य संबंधी अन्य नाम जैसे पंचायतन, भूमि, विमान आदि भी प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं।
- छठी शताब्दी ईस्वी तक उत्तर और दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला शैली लगभग एकसमान थी, लेकिन छठी शताब्दी ई. के बाद प्रत्येक क्षेत्र का भिन्न-भिन्न दिशाओं में विकास हुआ।
- आगे ब्राह्मण धर्म के मंदिरों के निर्माण में तीन प्रकार की शैलियों नागर, द्रविड़ और बेसर शैली का प्रयोग किया गया।

नागर शैली

- यह संरचनात्मक मंदिर स्थापत्य की एक शैली है जो हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत तक के क्षेत्रों में प्रचलित थी।
- इसे 8वीं से 13वीं शताब्दी के बीच उत्तर भारत में मौजूद शासक वंशों ने पर्याप्त संरक्षण दिया।
- नागर शैली की पहचान-विशेषताओं में उठता हुआ विमान एवं शिखरनुमा छत महत्त्वपूर्ण हैं। इसे अनुप्रस्थिका एवं उत्थापन समन्वय भी कहा जाता है।
- नागर शैली के मंदिर आधार से शिखर तक चतुष्कोणीय होते हैं।
- ये मंदिर उँचाई में आठ भागों में बाँटे गए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं- मूल (आधार), गर्भगृह मसरक (नींव और दीवारों के बीच का भाग), जंघा (दीवार), कपोत (कार्निस), शिखर, गल (गर्दन), वर्तुलाकार आमलक और कुंभ (शूल सहित कलश)।
- इस शैली में बने मंदिरों को ओडिशा में 'कलिंग', गुजरात में 'लाट' और हिमालयी क्षेत्र में 'पर्वतीय' कहा गया।

द्रविड़ शैली

- कृष्णा नदी से लेकर कन्याकुमारी तक द्रविड़ शैली के मंदिर पाए जाते हैं।
- द्रविड़ शैली की शुरुआत 8वीं शताब्दी में हुई और सुदूर दक्षिण भारत में इसकी दीर्घजीविता 18वीं शताब्दी तक बनी रही।
- द्रविड़ शैली की पहचान विशेषताओं में- प्राकार (चहारदीवारी), गोपुरम (प्रवेश द्वार), वर्गाकार या अष्टकोणीय गर्भगृह (रथ), पिरामिडनुमा शिखर, मंडप (नंदी मंडप) विशाल संकेन्द्रित प्रांगण तथा अष्टकोण मंदिर संरचना शामिल हैं।
- द्रविड़ शैली के मंदिर बहुमंजिला होते हैं।
- पल्लवों ने द्रविड़ शैली को जन्म दिया, चोल काल में इसने ऊँचाइयाँ हासिल कीं तथा विजय नगर काल के बाद से यह ह्रासमान हुई।
- चोलकाल में द्रविड़ शैली की वास्तुकला में मूर्तिकला और चित्रकला का संगम हो गया।
- यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल तंज़ोर का वृहदेश्वर मंदिर (चोल शासक राजराज-I द्वारा निर्मित) 1000 वर्षों से द्रविड़ शैली का जीता-जागता उदाहरण है।
- द्रविड़ शैली के अंतर्गत ही आगे नायक शैली का विकास हुआ, जिसके उदाहरण हैं– मीनाक्षी मंदिर (मदुरै), रंगनाथ मंदिर (श्रीरंगम, तमिलनाडु), रामेश्वरम् मंदिर आदि।

बेसर शैली

- नागर और द्रविड़ शैलियों के मिले-जुले रूप को बेसर शैली कहते हैं।
- इस शैली के मंदिर विंध्याचल पर्वत से लेकर कृष्णा नदी तक पाए जाते हैं।
- बेसर शैली को चालुक्य शैली भी कहते हैं।
- बेसर शैली के मंदिरों का आकार आधार से शिखर तक गोलाकार (वृत्ताकार) या अर्द्धगोलाकार होता है।
- बेसर शैली का उदाहरण है- वृंदावन का वैष्णव मंदिर जिसमें गोपुरम बनाया गया।
- गुप्तकाल के बाद देश में स्थापत्य को लेकर क्षेत्रीय शैलियों के विकास में एक नया मोड़ आता है।
- इस काल में ओडिशा, गुजरात, राजस्थान एवं बुंदेलखंड का स्थापत्य ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।
- इन स्थानों में 8वीं से 13वीं सदी तक महत्त्वपूर्ण मंदिरों का निर्माण हुआ।
- इसी दौर में दक्षिण भारत में चालुक्य, पल्लव, राष्ट्रकूटकालीन और चोलयुगीन स्थापत्य अपने वैशिष्ट्य के साथ सामने आया।

ओडिशा का स्थापत्य *(Architecture of Odisha)*

- ओडिशा के मंदिर मुख्यतः भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क में स्थित हैं।
- ओडिशा वास्तुकला की अपनी पहचान विशेषताओं में देउल (गर्भ गृह के ऊपर उठता हुआ विमान तल), जगमोहन (गर्भ गृह के बगल का विशाल हॉल), नटमंडप (जगमोहन के बगल में नृत्य के लिये हॉल), भोगमंडप, परकोटा तथा ग्रेनाइट पत्थर का इस्तेमाल शामिल है।
- भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर इस शैली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।
- सूर्य मंदिर (कोणार्क) का निर्माण गंग वंश के शासक नरसिंह देव प्रथम ने किया था।
- कोणार्क सूर्य मंदिर को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में भी शामिल किया गया।
- कोणार्क के ब्लैक पैगोडा (सूर्य मंदिर) के अतिरिक्त उत्तराखंड के अल्मोड़ा में कटारमल सूर्य मंदिर है।
- लिंगराज मंदिर ओडिशा मंदिर स्थापत्य की संपूर्ण विशेषताओं का सर्वोत्तम उदाहरण है।

गुजरात का स्थापत्य *(Architecture of Gujarat)*

- गुजरात के स्थापत्य को सोलंकी उपशैली, चालुक्य उपशैली या मंडोवार उपशैली भी कहा जाता है।
- इसके तहत हिन्दू मंदिरों के साथ-साथ जैन मंदिरों का भी निर्माण हुआ।
- अर्द्धगोलाकार पीठ और 'मंडोवार' गुजरात उपशैली की पहचान विशेषता हैं।
- वह अर्द्धगोलाकार संरचना जिसकी वजह से विमान-शिखर अलग-अलग दिखता है उसे मंडोवार कहते हैं।
- माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालिताना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में संगमरमर के दो मंदिर हैं- दिलवाड़ा का जैन मंदिर तथा तेजपाल मंदिर (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- कुंभरिया के पार्श्वनाथ मंदिर में भी राजस्थान के मकरान से उपलब्ध काले और सफेद संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है।
- माउंट आबू के मंदिरों का निर्माण सोलंकी शासक भीम सिंह प्रथम के मंत्री दंडनायक विमल ने करवाया था, इसी कारण इसे विमलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर गुर्जर-प्रतिहारों की देन माना जाता है।

बुंदेलखंड का स्थापत्य *(Architecture of Bundelkhand)*

- इसे खजुराहो उपशैली भी कहा जाता है।
- यह उपशैली 10वीं से 13वीं शताब्दी के बीच रही जिसे चंदेल शासकों ने पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया।
- यहाँ मंदिर निर्माण में पन्ना खदान के स्थानीय गुलाबी व मटमैले ग्रेनाइट एवं लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल हुआ है।
- खजुराहो उपशैली के मंदिर में परकोटा का पूर्ण अभाव है यानी मंदिर चहारदीवारी में नहीं है।
- 'उरूश्रृंग' व 'अंतराल' बुंदेलखंड स्थापत्य की अपनी पहचान विशेषता है।
- शिखर के ऊपर निकली हुई मिनारनुमा आकृति को 'उरूश्रृंग' कहते हैं तथा गर्भगृह और बरामदे के बीच के लंबे गलियारे को 'अंतराल' कहते हैं।
- मंदिर की प्रतिमाओं में देवता एवं देवी, अप्सरा के अलावा संभोगरत प्रतिमाएँ तथा पशुओं की आकृतियाँ हैं।
- खजुराहो के पश्चिमी समूह में लक्ष्मण, कंदरिया महादेव, मतंगेश्वर, लक्ष्मी, जगदम्बी, चित्रगुप्त, पार्वती तथा गणेश मंदिर और वराह व नंदी के मंडप शामिल हैं।
- खजुराहो के पूर्वी समूहों के मंदिरों में ब्रह्मा, वामन, जवारी व हनुमान मंदिर और जैन मंदिरों में आदिनाथ, पार्श्वनाथ, आदिनाथ घंटाई मंदिर शामिल हैं।
- खजुराहो के मंदिरों को यूनेस्को की विश्व विरासत की सूची में स्थान प्राप्त है।
- खजुराहो के समस्त मंदिरों में कला-तकनीक, प्रसिद्धि इन सबकी दृष्टि में कंदरिया महादेव मंदिर को सर्वोत्तम आँका गया है।

होयसल शासकों का स्थापत्य *(Architecture of Hoysal Rulers)*

- होयसल शासकों की कला को कर्नाटक-द्रविड़ कला कहा जाता है।
- इसका विकास ऐहोल, बादामी और पट्टदकल के प्रारंभिक चालुक्यकालीन मंदिरों में देखा जा सकता है।
- होयसल शासकों की कला में बेलूर का चिन्नाकेशव मंदिर, हलेबिड का होयसलेश्वर मंदिर तथा सोमनाथपुरम मंदिर विशिष्ट उदाहरण हैं।

पालकालीन स्थापत्य *(Architecture in Pala Age)*

- पालकालीन स्थापत्य के इस दौर में विक्रमशिला विहार, ओदंतपुरी विहार, जगदल्ला विहार आदि का निर्माण हुआ।
- धर्मपाल द्वारा निर्मित सोमापुर महाविहार (बांग्लादेश) सबसे बड़ा बौद्ध विहार है जिसे यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।
- नालंदा महाविहार की स्थापना तो गुप्तकाल (कुमार गुप्त) में हुई, किंतु पाल शासकों ने भी इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

चालुक्यकालीन स्थापत्य *(Architecture in Chalukya Age)*

- बादामी के चालुक्यों की कला की शुरुआत ऐहोल से है जबकि चरमोत्कर्ष बादामी और पट्टदकल में दिखता है।
- यह नागर और द्रविड़ शैली की विशेषताओं से युक्त बेसर शैली है।
- यहाँ के मंदिरों में चट्टानों को काटकर संयुक्त कक्ष और विशेष ढाँचे वाले मंदिरों का निर्माण देखने को मिलता है।
- ऐहोल में 70 से अधिक मंदिर हैं जिनमें रविकीर्ति द्वारा बनवाया गया मेगुती जैन मंदिर तथा लाढ़ खाँ का सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध है।
- बादामी के गुफा मंदिरों में खंभों वाला बरामदा, मेहराब युक्त कक्ष, छोटा गर्भगृह और उनकी गहराई प्रमुख हैं।
- बादामी में मिली चार गुफाएँ शिव, विष्णु, विष्णु अवतार व जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ से संबंधित हैं।
- बादामी के भूतनाथ, मल्लिकार्जुन और येल्लमा के मंदिरों के स्थापत्य को सराहना मिली है।
- पट्टदकल के विरूपाक्ष मंदिर का स्थापत्य अति विशिष्ट है। इसके अलावा यहाँ के मंदिरों में संगमेश्वर, पापनाथ आदि हैं।
- पट्टदकल के मंदिरों में चालुक्यकालीन स्थापत्य पूरे निखार पर है इसलिये इसे यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

राष्ट्रकूटकालीन स्थापत्य *(Architecture in Rashtrakuta Age)*

- राष्ट्रकूट के स्थापत्य में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में एलोरा नामक स्थल और मुंबई के निकट द्वीपीय स्थल एलीफैंटा की गुफाएँ महत्त्वपूर्ण हैं।
- 'रॉक कट आर्किटेक्चर' का बेहतरीन उदाहरण हैं एलोरा की गुफाएँ। इन्हें विश्व विरासत की सूची में शामिल किया गया है।
- इसमें कैलाश गुहा मंदिर (गुफा संख्या-16) की गणना विश्व स्तर की भव्यतम कलाकृतियों में की जाती है। इसकी तुलना एथेंस के प्रसिद्ध मंदिर 'पार्थेनन' से की गई है।
- विश्व विरासत में शामिल एलीफैंटा की अधिकतर गुफाएँ हिन्दू (शिव) और शेष बौद्ध धर्म को समर्पित हैं जबकि एलोरा हिन्दू, बौद्ध व जैन तीनों को समर्पित रहा है।
- एलीफैंटा में बनी त्रिमूर्ति विश्व प्रसिद्ध है, जो शिव के ही तीनों रूपों की है।
- कोंकणी मौर्यों के समय इस द्वीप को धारापुरी कहा जाता था, बाद में हाथी की एक विशाल प्रतिमा मिलने के कारण पुर्तगालियों ने इसे एलीफैंटा कहा।

पल्लवकालीन स्थापत्य *(Architecture in Pallava Age)*

- पल्लव कला के विकास की शैलियों को क्रमशः महेंद्र शैली (610–640 ई.), मामल्ल शैली (640–674 ई.) और राजसिंह शैली (674–800 ई.) में देखा जा सकता है।

- पल्लव राजा महेन्द्र वर्मन के समय वास्तुकला में 'मंडप' निर्माण प्रारंभ हुआ।
- राजा नरसिंह वर्मन ने चिंगलपेट में समुद्र किनारे महाबलीपुरम उर्फ मामल्लपुरम नामक नगर की स्थापना की और 'रथ' निर्माण का शुभारंभ किया।
- पल्लव काल में रथ या मंडप दोनों ही प्रस्तर काटकर बनाए जाते थे।
- पल्लवकालीन आदि-वराह, महिषमर्दिनी, पंचपांडव, रामानुज आदि मंडप विशेष प्रसिद्ध हैं।
- 'रथमंदिर' मूर्तिकला का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिनमें द्रौपदी रथ, नकुल- सहदेव रथ, अर्जुन रथ, भीम रथ, गणेश रथ, पिंडारि रथ तथा वलैयंकुट्टै प्रमुख हैं।
- इन आठ रथों में द्रौपदी रथ एकमंजिला और छोटा है बाकी सातों रथों को सप्त पैगोडा कहा गया।
- पल्लव काल की अंतिम एवं महत्त्वपूर्ण 'राजसिंह शैली' में रॉक कट आर्किटेक्चर के स्थान पर पत्थर, ईंट आदि से मंदिरों का निर्माण शुरू हुआ।
- राजसिंह शैली के उदाहरण महाबलीपुरम के तटीय मंदिर, अर्काट का पनमलाई मंदिर, कांची का कैलाशनाथ और बैकुंठ पेरूमल का मंदिर आदि हैं।
- आगे पल्लवकाल के नन्दीवर्मन/अपराजिता शैली में संरचनात्मक मंदिर निर्माण की शुरुआत हुई और दक्षिण भारत में एक स्वतंत्र शैली उभरी जिसे द्रविड़ शैली कहा गया।

चोलकालीन स्थापत्य *(Architecture in Chola Age)*

- चोल शासकों ने द्रविड़ शैली के अंतर्गत ईंटों की जगह पत्थरों और शिलाओं का प्रयोग कर ऐसे-ऐसे मंदिर बनाए जिनका अनुकरण पड़ोसी राज्यों एवं देशों तक ने किया।
- चोल इतिहास के प्रथम चरण (विजयालय से लेकर उत्तम चोल) में तिरुकट्टलाई का सुंदेश्वर मंदिर, कन्नूर का बालसुब्रह्मणयम मंदिर, नरतमालै का विजयालय मंदिर, कुंभकोणम का नागेश्वर मंदिर तथा कदम्बर- मलाई मंदिर आदि का निर्माण हुआ।
- महान चोलों (राजराज-I से कुलोतुंग-III तक) के दौर में तंजावुर में वृहदेश्वर मंदिर तथा गंगईकोंड चोलपुरम का शिव मंदिर (राजेन्द्र प्रथम का) ख्याति प्राप्त हैं।
- इन दोनों मंदिरों को देखकर कहा गया कि "उन्होंने दैत्यों के समान कल्पना की और जौहरियों के समान उसे पूरा किया।" (They concept like Giants and they Finished Like Jewelers)
- इन दोनों के अलावा दारासुरम का ऐरावतेश्वर और त्रिभुवनम का कम्पहरेश्वर मंदिर भी सुंदर एवं भव्य हैं।
- चोल स्थापत्य की सबसे बड़ी खासियत है कि उन्होंने वास्तुकला में मूर्तिकला और चित्रकला का भी बेजोड़ संगम किया।
- चोलयुगीन मूर्तियों में नटराज की कांस्य प्रतिमा सर्वोत्कृष्ट है। इसे चोलकला का सांस्कृतिक निष्कर्ष कहा गया है।

हिंद-इस्लामिक वास्तुकला *(Indo-Islamic Architecture)*

- सल्तनत काल में भारतीय तथा इस्लामी शैलियों की विशेषताओं से युक्त स्थापत्य का विकास हुआ, इसे हिन्दू-इस्लामी या इंडो-इस्लामिक शैली कहा गया।
- इस युग में किला, मकबरा, मस्जिद, महल एवं मेहराब-गुम्बद तथा सँकरी एवं ऊँची मीनारें बड़ी संख्या में बनाई गईं।
- इस काल में ही इमारतों की मज़बूती हेतु पत्थर और गारे में अच्छे किस्म के चूने का प्रयोग किया गया।
- मेहराब-गुम्बद बनाने में भारतीय शहतीरी शिल्प कला (Trabviet Pattern) और तुर्की मेहराबी कला (Arcuate Pattern) का समन्वय (Arch-dom combination) हुआ जो इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की पहचान विशेषता है।
- इमारतों की साज-सज्जा में भारतीय अलंकरण और इस्लामिक सादगीयता का समन्वय हुआ और अरबस्क शैली (Arabasque pattern) उभरी।

- इसके तहत फूल-पत्तियाँ, ज्यामितीय आकृतियाँ, कुरान की आयतों के साथ-साथ कमलबेल, स्वास्तिक, घंटियों, कलश आदि की गच्चकारी भी की गई।
- इंडो-इस्लामिक स्थापत्य के अंतर्गत डाटदार पत्थर का इस्तेमाल शुरू हुआ।

ऐबक एवं गुलाम वंश के शासकों का योगदान

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में तथा इस्लाम धर्म को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से 1192 ई. में दिल्ली में इसका निर्माण करवाया।
- यह ऐबक द्वारा ध्वस्त किये गए 27 हिन्दू एवं जैन मंदिरों के स्थापत्य खंडों पर बनाई गई है जिसके प्रांगण में स्थित लौह स्तंभ पर चौथी शताब्दी के ब्राह्मी लिपि के अभिलेख मौजूद हैं। इसे 'अनंग पाल की किल्ली' भी कहते हैं।
- इल्तुतमिश ने मस्जिद के प्रांगण को दोगुना करवाया तथा अलाउद्दीन खिलजी ने इस पर कुरान की आयतें लिखवाईं।

कुतुबमीनार (महरौली दिल्ली)

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के परिसर में 1199 ई. में इसका निर्माण शुरू करवाया जिसे इल्तुतमिश ने चार मंजिल तक पहुँचा दिया।
- लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह भारत की सबसे ऊँची मीनार है जो 238 फीट ऊँची है। वर्तमान में यह पाँच मंजिला है।
- इसका निर्माण सूफी संत 'ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' की स्मृति में कराया गया था।
- इसकी मरम्मत फिरोजशाह तुगलक, सिकंदर लोदी व आगे मेजर आर. स्मिथ ने करवाई।
- मीनार के निकले छज्जों को छत्तेदार डिज़ाइन से अलंकृत पत्थरों के ब्रेकटों द्वारा सहारा दिया गया है।
- मीनार के विभिन्न हिस्सों पर अरबी और नागरी लिपि में अनेक अभिलेख मौजूद हैं।
- यह देश का पहला स्मारक है जहाँ ई-टिकट की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

अढ़ाई दिन का झोपड़ा

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद का निर्माण अजमेर में करवाया।
- यहाँ चलने वाले ढाई दिन के उर्स के कारण यह नाम पड़ा।
- यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद से अधिक बड़ा व आकर्षक है।
- इस मस्जिद पर इस्लामिक प्रभाव से अधिक भारतीय प्रभाव माना जाता है। इसलिये इसे हिन्दू इमारत के ध्वंस पर बनी मस्जिद कहा जाता है।

सुल्तान गढ़ी का मकबरा

- यह सल्तनत काल का 'पहला मकबरा' है।
- इल्तुतमिश ने अपने बड़े योग्य पुत्र नासिरुद्दीन महमूद की याद में कुतुबमीनार के निकट 1231 ई. में इसका निर्माण करवाया था।
- यह भवन किले जैसा लगता है जिसमें भूरे पत्थर और संगमरमर का प्रयोग किया गया है।
- अष्टकोणीय चबूतरे पर निर्मित मेहराबों में मुस्लिम कला एवं गुम्बद के आकार की छत में हिन्दू कला शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

इल्तुतमिश का मकबरा

- इस एक कक्षीय मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के समीप लगभग 1235 ई. में करवाया।

- इल्तुतमिश ने इसके अलावा दिल्ली में हौज-ए-शम्सी, गंधक की बावली और मदरसा- ए-नासीरिया, बदायूँ में जामी मस्जिद और नागौर (राजस्थान) में अतारकिन का दरवाज़ा का निर्माण करवाया।
- उसके बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठी रजिया की कब्र दिल्ली के बुलबुलीखाना में बनी है पर कुछ विद्वान मानते हैं कि उसकी कब्र कैथल (करनाल, हरियाणा) में है।

बलबन का मकबरा

दिल्ली में कुतुब परिसर में स्थित सुल्तान बलबन के मकबरे में सर्वप्रथम वास्तविक मेहराब का रूप मिलता है।

खिलजी वास्तुकला

- अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी में 1303 ई. में अपनी नई राजधानी नगर की स्थापना की।
- इसके भीतर उसने कस्त्रे हज़ार सितून भवन, तोहफेवाला गुम्बद, हौज-ए-अलाई (हौज खास) आदि का निर्माण करवाया।

अलाई दरवाज़ा

- 1310-1311 ई. में निर्मित यह इमारत इस्लामिक वास्तुकला के सिद्धांतों पर बनी पहली इमारत है। इसमें सेल्जुक कला की विशेषताएँ भी मिलती हैं।
- बेहद सघन अलंकरण, संगमरमर की बारीक काम वाली जालियाँ, खिड़कियों पर आले, घोड़े की नाल जैसी मेहराब, कमल कली जैसा अलंकरण इसकी विशेषता है।
- पहली बार वास्तविक गुम्बद का स्वरूप अलाई दरवाज़ा में ही दिखाई देता है।
- निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर बनी जमातखाना मस्जिद तथा मुबारकशाह खिलजी द्वारा बयाना में बनवाई गई उखा मस्जिद भी खिलजी वास्तुकला के उदाहरण हैं।

तुगलक वास्तुकला

- भवन निर्माण में इस्लामिक सादगी, मोटी व ढलवाँ दीवारें, छज्जे का अत्यधिक इस्तेमाल, अष्टभुज आधार पर संगमरमर की सफेद गुम्बद तथा मस्जिदों का क्रॉस आधार जैसी विशेषताएँ तुगलक काल में देखी जा सकती हैं।
- फिरोजशाह तुगलक ने सल्तनतकाल में वास्तुकला की उन्नति में विशेष योगदान करते हुए वास्तुकला के विभाग की ही स्थापना की (दीवान-ए-इमरतिया)।

तुगलकाबाद का किला

- गयासुद्दीन तुगलक (1321-25 ई.) ने किलेबंदी वाले तुगलकाबाद नगर का निर्माण करवाया जिसमें 52 द्वार थे। यह दिल्ली का तीसरा नगर था।
- इस किले की नींव और दीवारें बहुत मोटी हैं और अनगढ़ पत्थरों से बनी हैं।

जहाँपनाह नगर

- मुहम्मद तुगलक ने इसकी स्थापना रायपिथौरा एवं सीरी को मिलाकर की।
- इस नगर के अवशेषों में सिंचाई की सुविधा के लिये सतपुला, सेना की गतिविधियाँ देखने के लिये बिजाईमंडल इमारत प्रमुख हैं।

गयासुद्दीन का मकबरा

- तुगलकाबाद किले के मुख्य प्रवेश द्वार पर अनियमित पंचभुज आकार वाला यह मकबरा लाल बलुआ पत्थरों से बना है जिसे संगमरमर द्वारा उभारा गया है।
- मूल रूप से यह एक कृत्रिम जलाशय में खड़ा था और एक पक्के नदी पथ द्वारा तुगलकाबाद से जुड़ा था।

कोटला फिरोजशाह

- यमुना से सटा फिरोजाबाद फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित दिल्ली का पाँचवां नगर है। इसे कोटला फिरोजशाह भी कहते हैं।
- इसमें महल, स्तंभ-लगा हॉल, मस्जिद, टॉवर और बावड़ी के साथ-साथ जामा मस्जिद और मौर्य सम्राट अशोक की लाट है।
- कुश्क-ए-शिकार महल के सामने अशोक का दूसरा स्तंभ गड़ा है। यह शिकारगाह था।
- इसके अलावा इस युग में दिल्ली में फिरोजशाह का मकबरा, दरगाह हजरत रोशन चिराग, निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, अमीर खुसरो का मकबरा, कबीरुद्दीन का मकबरा या लाल गुम्बद (रकाबवाला), चिड़ियाघर आदि इमारतें बनीं।
- फिरोजशाह तुगलक के वजीर खान-ए-जहाँ तेलंगानी का उसके पुत्र द्वारा बनवाया गया अष्टकोणीय मकबरा भी बहुत प्रसिद्ध है।
- कुछ मस्जिदें जैसे खिड़की मस्जिद, काली मस्जिद, बेगमपुरी मस्जिद, कला मस्जिद, संचार मस्जिद तथा फिरोजशाह के बेटे फतह खाँ का मकबरा बनवाया गया।

सैय्यद और लोदीकालीन वास्तुकला

- इस दौर में शुरू हुए विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति ने स्थापत्य को भी बादशाहों के अलावा अमीरों की ड्योढ़ी तक पहुँचाया।
- सैय्यदों के काल में खिज्र खाँ ने दिल्ली में 'खिज्राबाद' एवं मुबारक शाह ने 'मुबारकाबाद' का निर्माण करवाया।
- इस दौर में अमीरों द्वारा निर्मित इमारत चतुर्भुजी और शासक द्वारा निर्मित इमारत अष्टभुजी (Octagonal) है।
- लोदी काल में विशाल गुंबद का निर्माण, संगमरमर टाइल्स का इस्तेमाल तथा छज्जे का इमारत में पूर्ण अभाव जैसी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।
- लोदी काल की इमारतों में चारबाग पैटर्न की शुरुआत के साथ-साथ बेहतर अनुपात और उच्च गुणवत्ता वाले सामान का प्रयोग देखा जा सकता है।

सिकंदर लोदी का मकबरा

- इब्राहीम लोदी ने इसे 1517 ई. में बनवाया।
- यह अष्टकोणीय मकबरा एक वर्गाकार ऊँची चहारदीवारी के प्रांगण में स्थित है जिसके चारों किनारों पर बुर्ज बने हैं।

मोठ की मस्जिद

- यह लोदी काल की सबसे उत्कृष्ट इमारत है जिसे 1505 ई. में सिकंदर लोदी के वज़ीर मियाँ भुयाँ ने बनवाया।
- यह चतुर्भुजी इमारत है जिसमें पाँच नमाज के प्रतीक पाँच मेहराब हैं और यहाँ मेहराब निर्माण की कला पूर्णता के साथ है।
- मोठ की मस्जिद के निर्माण में हुए प्रयोग ने आगे मुगलों को भी बहुत प्रभावित किया।

विजयनगर स्थापत्य *(Vijaynagar Architecture)*

- विजयनगर काल (1336-1565 ई.) के स्थापत्य पर चालुक्य, चोल, पांड्य और होयसलों का प्रभाव दिखता है।
- विजयनगर (हम्पी) तुंगभद्रा नदी के किनारे बसा है।
- विजयनगर दौर में जो भी मंदिर बनवाए गए, वे सब द्रविड़ वास्तुकला शैली के अंतर्गत हैं।
- स्तंभों का अत्यधिक इस्तेमाल, एकाश्म पत्थर से निर्मित विस्तृत, अलंकृत और सज्जापूर्ण स्तंभ विजयनगर शैली की अपनी विशेषता है। इसे 'बोदिगेई' कहते हैं।
- विजयनगर दौर में एक नवीन मंडप का चलन आया जिसे 'कल्याण मंडप' कहा गया।

- यहाँ मुख्य मंदिरों के साथ-साथ सहायक मंदिरों की शृंखला को जोड़ा गया जिसे 'अम्मनशिरीन' कहा गया।
- विजयनगर में इस्तेमाल हुए स्तंभ संगीत का गुण रखते थे इसलिये इसे संगीतात्मक स्तंभ (Musical Pillers) भी कहा गया। प्रसिद्ध विजय विट्ठल मंदिर इसका उदाहरण है।
- विजयनगर काल में मंदिरों में मूर्ति प्रतिष्ठापन में शासकों और उनकी पत्नियों की भी मूर्ति लगाई जाने लगी।
- विजयनगर काल में सरोवरों के साथ बनाए गए इन मंदिरों में विट्ठलनाथ मंदिर, हज़ाराराम मंदिर, विरूपाक्ष मंदिर, रघुनाथ मंदिर, नरसिम्हा मंदिर, सुग्रीव गुफा, विठाला मंदिर, कृष्ण मंदिर तथा महानवमी डिब्बा प्रमुख हैं।
- विजयनगर शासकों के दौर में विजयनगर, विद्यानगर, नगलापुरम, बेल्लोर जैसे नगरों की स्थापना हुई। इसमें विजयनगर उर्फ हम्पी महत्त्वपूर्ण है।
- विजयनगर उर्फ हम्पी शहर का मुख्य क्षेत्र 25 किमी. में फैला है और यह ग्रेनाइट एवं क्लोराइट पत्थर से निर्मित है।
- हरिहर-बुक्का द्वारा स्थापित यह नगर वर्तमान कर्नाटक में है।
- 'नूनिज' (पुर्तगाली यात्री) विजयनगर को रोम से उत्तम शहर मानता है तो अब्दुर्रज्जाक (फारस के यात्री) के अनुसार "आँखों के तारों ने ऐसा देखा नहीं तथा बुद्धि के कानों ने ऐसा सुना नहीं जैसा विजयनगर है।"

मुगलकालीन स्थापत्य *(Mughal Architecture)*

- मुगल वास्तुकला इंडो-इस्लामिक स्थापत्य का अंतिम पड़ाव है जिसमें ईरानी तत्त्व, तूरानी तत्त्व, ट्रांस ऑक्सियाना तत्त्व तथा सल्तनतकालीन तत्त्वों का भारतीय तत्त्व के साथ सम्मिलन हुआ है।
- मुगल वास्तुकला में डाँटदार पत्थर, लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर तीनों का इस्तेमाल हुआ है।
- मुगल वास्तुकला में मीलों घेरा वाले किले की प्रवृत्ति आम हो गई। किलों के भीतर ही पूरा शहर समा सकता है।
- भवन निर्माण में घुमावदार, कोणदार और रंगीन मेहराब का इस्तेमाल मुगलकालीन वास्तुकला की पहचान है।
- **पित्रादूरा तकनीक** (संगमरमर पत्थर पर जवाहरात के जड़ाऊ काम) मुगल वास्तुकला की अपनी पहचान विशेषता है।
- मुगल स्थापत्य में भव्यता, विशालता पर जितना ध्यान दिया गया, उतना ही ध्यान सजावट, अलंकरण व नाजुकता पर भी दिया गया।
- मुगल वास्तुकला का विकास क्रम है- शुरुआत बाबर, विकास अकबर, चरम शाहजहाँ तथा पतन औरंगजेब।

बाबर काल

- 'बाबरनामा' के अनुसार तत्कालीन वास्तुकला में संतुलन का अभाव था इसलिये बाबर ने ध्यान रखा कि इमारतें सामंजस्यपूर्ण और ज्यामितीय हों।
- कश्मीर का निशात बाग, लाहौर का शालीमार बाग, पानीपत की काबुली बाग मस्जिद, संभल की जामी मस्जिद, अब्दुलबकी द्वारा तैयार अयोध्या की बाबरी मस्जिद तथा आगरा का रामबाग और जहराबाग बाबर काल की देन हैं।
- बाबर काल के स्थापत्य में शिल्पगत सौंदर्य की कमी ज़रूर थी किंतु इसकी विशालता अद्‌भुत थी और इस हेतु उसने अल्बानिया से भी विशेषज्ञ बुलाए थे।
- हालाँकि हुमायूँ विपरीत राजनीतिक परिस्थितियों के कारण वास्तुकला में वैसा योगदान नहीं कर सका किंतु हुमायूँ ईरानी शैली को अधिक पसंद करता था।
- हुमायूँ ने दिल्ली में दीनपनाह नामक भवन की नींव डाली थी।

अकबर काल

- अकबर के शासन काल में हुए निर्माण कार्यों में हिन्दू-मुस्लिम शैलियों का व्यापक समन्वय दिखता है।
- अबुल फज़ल के अनुसार- 'सम्राट सुन्दर इमारतों की योजना बनाता है और अपने मस्तिष्क एवं हृदय के विचार से पत्थर एवं गारे का रूप देता है।'
- हुमायूँ का मकबरा (1564 ई.), आगरा का किला (1565 ई.), लाहौर किला, फतेहपुर सीकरी का किला (1572 ई.), इलाहाबाद का किला (1583 ई.) तथा इन किलों में सैकड़ों इमारतों का निर्माण अकबर काल में हुआ।

हुमायूँ का मकबरा

- 1564 ई. में निर्मित यह इमारत वास्तव में अकबर की माँ और हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानो बेगम की देन है।
- इसका डिज़ाइन फारसी शिल्पकार मलिक मिर्जा ग्यास बेग ने तैयार किया था।
- लाल बलुआ पत्थर द्वारा निर्मित तथा चार बाग शैली पर आधारित इस इमारत के दोहरे गुबंद में संगमरमर का इस्तेमाल हुआ है।
- इसी इमारत के डिज़ाइन पर भविष्य में ताजमहल बना।

आगरा का किला

- आगरा शहर की स्थापना सिकंदर लोदी ने 1504 ई. में की थी लेकिन आगरा के किले की नींव रखी अकबर ने 1564 ई. में और धीरे-धीरे एक पीढ़ी में यह तैयार हुआ।
- 1.5 मील व्यास और 70 फीट ऊँची दीवार वाले आगरा फोर्ट में दो दरवाज़े हैं- दिल्ली गेट और अमर सिंह दरवाज़ा।
- इस गेट पर अकबर ने मेवाड़ की रक्षा में अपनी आहुति देने वाले दो वीर राजपूत नायक जयमल और फत्ता की मूर्ति लगवाई।
- आगरा फोर्ट में 500 से अधिक इमारतें थीं लेकिन अकबरी महल और जहाँगीरी महल ही विवादमुक्त रूप से अकबर काल की स्वीकारी गई।
- जहाँगीरी महल (शहजादा सलीम का आवास) पर ग्वालियर किले व हिन्दू कला का ज़बरदस्त प्रभाव है।
- अकबरी महल (शहंशाह अकबर का आवास) पर बंगाल स्थापत्य का अत्यधिक प्रभाव रहा।

फतेहपुर सीकरी का किला

- आगरा से 36 किमी. पश्चिम में स्थित यह जगह प्राचीन काल में 'सीकरी रूपबल' था जहाँ पत्थर पर संगतराशी का काम चलता था।
- अकबर ने यहाँ लाल बलुआ पत्थर से सात मील लंबे घेरे वाले किले का निर्माण किया और इसे अपनी प्रशासनिक राजधानी बनाई।
- पहाड़ी पर बसे इस महल में एक बड़ी कृत्रिम झील (अनूप तालाब) व गुजरात तथा बंगाल शैली में कई भवन बनवाए गए।
- फतेहपुर सीकरी का डिज़ाइन तैयार किया था 'बहाउद्दीन' ने।
- फतेहपुर सीकरी में दीवान-ए-आम, दीवान-ए- खास, जामी मस्जिद, इबादत-खाना, सलीम चिश्ती का मकबरा, बुलंद दरवाज़ा, हिरण मीनार, मीना बाज़ार, ज्योतिषी की बैठक, हवा महल, पंच महल, बीरबल महल, जोधा का महल, मरियम का महल तथा तुर्की सुल्ताना की कोठी आदि भवन हैं।
- बुलंद दरवाज़ा, अकबर ने यहाँ गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बनवाया था।
- मरियम का महल पेंटिंग और मीनाकारी के कारण प्रसिद्ध है।
- तुर्की सुल्ताना की कोठी कलाविद् पर्सी ब्राउन के अनुसार स्थापत्य का मोती है क्योंकि इसमें काष्ठ तकनीक का शानदार इस्तेमाल हुआ है।

- फतेहपुर सीकरी स्थित जोधा महल में हिन्दू छाप के साथ-साथ ऋतु के अनुसार कमरे के तापमान को नियंत्रित रखने की तकनीक का भी इस्तेमाल किया गया है।
- 'स्मिथ' फतेहपुर सीकरी के बारे में कहता है 'यह पत्थरों में ढाला गया रोमांस है।'

जहाँगीर काल

- जहाँगीर ने वास्तुकला की जगह बाग-बगीचों और चित्रकारी को अधिक महत्त्व दिया इसलिये कुछ इतिहासकार जहाँगीर काल को स्थापत्य का विश्राम काल कहते हैं।
- जहाँगीर काल में अकबर का मकबरा (सिकंदरा), एतमादुद्दौला का मकबरा (आगरा), अब्दुर्रहीम खानखाना का मकबरा (आगरा), अनारकली का मकबरा (श्रीनगर), जहाँगीर का मकबरा (लाहौर), दिलकुशा बाग (लाहौर), शालीमार बाग (कश्मीर) आदि वास्तुकला के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।
- सिकंदरा स्थित अकबर के मकबरे पर हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध और ईसाई कलाओं का प्रभाव है और इसी मुगल इमारत की मीनारें सबसे उत्तम आँकी गई हैं।

एतमादुद्दौला का मकबरा

- अकबर एवं शाहजहाँ की शैलियों के मध्य एक कड़ी है।
- इसका निर्माण मलिका-ए-आलम नूरजहाँ (मेहरुन्निसा) ने 1626 ई. में करवाया था जो मिर्जा ग्यास बेग उर्फ एतमादुद्दौला की पुत्री थी।
- आगरा में यमुना किनारे सफेद संगमरमर से निर्मित इस इमारत में ही सर्वप्रथम पित्रादूरा तकनीक (पत्थरों पर जवाहरात जड़ने का काम) का इस्तेमाल किया गया।
- मरियम उज-जमानी का मकबरा।
- सिकन्दरा में अकबर के मकबरे के निकट जहाँगीर ने एक बाग में इसे बनवाया।
- राजस्थानी प्रभाव वाले इस मकबरे को कुछ इतिहासकारों ने अकबर की पत्नी और जहाँगीर की माँ हरखाबाई का माना है।
- जहाँगीर ने मरियम उज-जमानी की याद में लाहौर में भी मस्जिद बनवाई थी।

शाहजहाँ काल

- शाहजहाँ के समय मुगल स्थापत्य कला अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँची।
- इस दौर में संगमरमर पत्थरों का अत्यधिक इस्तेमाल तथा पित्रादूरा तकनीक का रूप निखरकर सामने आया।
- शाहजहाँ काल में मेहराब, गुंबद, मीनार, परकोटा और बुर्ज सब आदर्श संतुलन में उपस्थित हुआ।
- आगरा किले का पुनरुद्धार, शाहजहाँनाबाद, दिल्ली में लाल किला व जामा मस्जिद का निर्माण तथा आगरा में विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ की स्थापत्य संबंधी विशिष्ट देन हैं।

लाल किला : दिल्ली

- सातवीं दिल्ली को बसाने का श्रेय शाहजहाँ को है।
- शाहजहाँ ने 1638 ई. में यमुना नदी के दाहिने तट पर 'शाहजहाँनाबाद' नामक नगर की नींव डाली।
- इस नगर में 14 फाटक और चाँदनी चौक बाज़ार बनाया गया एवं बाज़ार के बीच से नहर निकाली गई जिसे नहर-ए-विहिस्त' कहा गया।
- शाहजहाँनाबाद नगर में अष्टभुजाकार 'लाल किला' का निर्माण करवाया गया।
- 1648 ई. में लाल बलुआ पत्थर निर्मित इस किले में रंग महल, हीरा महल, नौबतखाना, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास आदि महत्त्वपूर्ण इमारतें हैं।

- लाल किले में बनी दीवान-ए-आम इमारत के स्तंभों पर बनी नौ द्वारों वाली लहरदार मेहराबों का एक कक्ष है जिसका एक हिस्सा बंगाल शैली की छत से बना है।
- इसी छत के नीचे 'तख्त-ए-ताऊस' से लगे हुए रंगमहल का निर्माण शाही परिवार के लोगों के लिये किया गया था।
- 'दीवान-ए-खास' के अन्दर की छत में चाँदी, सोने एवं अनेक बहुमूल्य पत्थर तथा संगमरमर की मिली-जुली सजावट की गई है।
- किले में बनी रंगमहल इमारत को विभिन्न रंगों और शीशे से सजाया गया है। इसलिये इसे शीश महल भी कहते हैं।
- किले की पूर्वी दीवार में एक मुसम्मम बुर्ज है जहाँ बादशाह आम जनता को दर्शन दिया करते थे।
- लाल किले के भीतर औरंगजेब ने मोती मस्जिद का निर्माण करवाया था जिसके बाएँ तरफ हयात बख्श बाग बनाया गया है।
- हयात बख्श बाग के प्राकृतिक दृश्य को देखने के लिये दो मंडप बनाए गए जिसे सावन मंडप और भादो मंडप कहा गया। इस बाग का फव्वारा महत्त्वपूर्ण है।
- महलों की पंक्तियों के दक्षिणी छोर पर बनी इमारत का नाम मुमताज महल रखा गया जिसे अब पुरातत्त्व संग्रहालय बना दिया गया है।

ताजमहल

- शाहजहाँ ने आगरा में यमुना नदी के तट पर इस मकबरे को अपनी प्रिय बेगम 'मुमताज महल' (अर्जुमन्द बानो बेगम) की याद में (1631-53 ई.) के बीच बनवाया था।
- विश्व प्रसिद्ध इस मकबरे में मध्य एशिया, ईरान एवं भारत की भवन निर्माण शैलियों का सामंजस्यपूर्ण संयोजन है।
- उस्ताद अहमद लाहौरी ने इसका डिज़ाइन तैयार किया और उस्ताद ईसा खाँ के निर्देशन में 22 साल काम चला तब जाकर यह इमारत तैयार हुई।
- श्वेत संगमरमर से निर्मित इस इमारत में पित्रादूरा (Pietra Dura) शैली में सुन्दर सजावट का काम किया गया है।
- ताजमहल कई इमारतों से प्रेरित रहा यथा- (i) डिज़ाइन और चारबाग शैली में यह हुमायूँ के मकबरे से (ii) इस्लामिक सादगीयता के मामले में यह अकबर के मकबरे से (iii) कब्र डिज़ाइन के मामले में यह मांडू के होशंगशाह के मकबरे से (iv) संगमरमर एवं पित्रादूरा तकनीक के इस्तेमाल में यह एतमादुद्दौला के मकबरे से तथा (v) झील में भवन के छवि चित्रण के मामले में यह सासाराम स्थित शेरशाह के मकबरे से प्रेरित रहा।
- इस प्रकार विश्व प्रसिद्ध ताजमहल मुगल स्थापत्य कला की समस्त खूबियों से लैस है तथा यह यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल होने वाला भारत का प्रथम स्मारक है।

पित्रादूरा तकनीक (Pietra Dura)

- यह इतालवी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है हार्ड स्टोन या कठोर पत्थर।
- यह कला 16वीं सदी में इटली के रोम में प्रयुक्त हुई और बाद में फ्लोरेंस के कलाकारों ने इसे शीर्ष पर पहुँचाया।
- सरल शब्दों में यह पत्थरों पर जड़ाऊ काम है जिसका इस्तेमाल मुगल स्थापत्य कला में बखूबी किया गया है।

औरंगजेब काल

- अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव और शासक की राजनीतिक परेशानियों के कारण औरंगजेब काल में मुगल वास्तुकला में ह्रास उत्पन्न हुआ और आगे निरंतरता जारी रही।
- बादशाही मस्जिद (लाहौर), मोती मस्जिद (लालकिला) और राबिया-उद-दौरानी का मकबरा (औरंगाबाद) इस दौर की प्रमुख इमारतें हैं।

राबिया-उद-दौरानी का मकबरा

- यह मकबरा औरंगजेब की एकमात्र बेगम दिलरस बानो बेगम या राबिया-उद-दौरानी की याद में बनवाया गया।
- इसे दक्कनी ताज या बीबी का मकबरा भी कहते हैं।
- इसके वास्तुकार अताउल्लाह (उस्ताद अहमद लाहौरी का पुत्र) और हंसपत राय थे।
- इसके निर्माण में भी संगमरमर का इस्तेमाल हुआ है तथा मकबरे के कक्ष की दीवारों और छतों पर बहुत सुन्दर नक्काशी की गई है किंतु इसमें ह्रास के लक्षण स्पष्ट दिखते हैं।
- औरंगजेब काल और उसके बाद के मुगल शासकों के दौर में बनी इमारतें स्थापत्य की दृष्टि से महत्त्वहीन रहीं (सफदरजंग के मकबरे को छोड़कर)। अत: औरंगजेब का काल मुगल स्थापत्य कला का अंतिम पड़ाव साबित हुआ।
- मुगलों के बाद यूरोपीय कला शैली का भारत में प्रभाव बढ़ता चला गया।

आधुनिक वास्तुकला *(Modern Architecture)*

- अंग्रेज़ों ने गोथिक एवं नवगोथिक, इम्पीरियल, क्रिश्चियन, विक्टोरियन, नवशास्त्रीय, रोमांसक्यू व पुनर्जागरण जैसी यूरोपीय शैलियों की इमारतें बनवाईं।
- ब्रिटिश लोगों ने यहाँ उपनिवेश को अपने घर जैसे माहौल देने हेतु अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता के प्रदर्शन हेतु तथा भारतीय लोगों से दूरी बनाए रखने हेतु यूरोपीय शैली को अपनाया।
- 1833 ई. में बना मुंबई का टाउन हॉल तथा 1860 के दशक में मुंबई में बनी कई इमारतें नवशास्त्रीय शैली के उदाहरण हैं जिनमें बड़े-बड़े स्तंभों के पीछे रेखागणितीय संरचनाओं का निर्माण किया गया।
- नवगोथिक शैली में मुंबई के सचिवालय, विश्वविद्यालय, उच्च न्यायालय जैसी कई इमारतें बनीं जो तत्कालीन वणिक वर्ग को पसंद आईं।
- नवगोथिक शैली का सबसे अच्छा उदाहरण अभी मुम्बई का छत्रपति शिवाजी टर्मिनस है जो कभी ग्रेट इंडियन पेनिनसुलर रेलवे कंपनी का स्टेशन और मुख्यालय विक्टोरिया टर्मिनस था। इसे विश्व विरासत सूची में भी शामिल कर लिया गया है।
- इंडो-सारसेनिक शैली हिंदू, मुस्लिम और पश्चिमी तत्त्वों का मिश्रण है जिसमें गुम्बदों, छतरियों, जालियों, मेहराबों को अपनाया गया है।
- अंग्रेज़ों ने इस शैली में सार्वजनिक भवन जैसे डाकखाना, रेलवे स्टेशन, विश्राम गृह, सरकारी दफ्तर आदि का निर्माण करवाया।
- विलियम इमरसन ने कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल को बनाने में ताजमहल से प्रेरणा ली, यह ब्रिटिश स्थापत्य में भारतीय तत्त्वों की बढ़ती मात्रा का प्रतीक है।
- आगे सेंट जॉन कॉलेज आगरा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (म्योर कॉलेज) तथा मद्रास उच्च न्यायालय के निर्माण में यह शैली निखरकर सामने आई।

दिल्ली का स्थापत्य

- दिल्ली में कश्मीरी गेट क्षेत्र में मेटकॉफ हाउस (1835) तथा सेंट जेम्स चर्च (1836) दिल्ली के सबसे पुराने ब्रिटिश स्थापत्य के नमूने हैं।
- इसके अलावा टाउन हॉल (1866), घंटाघर (1868), सेंट स्टीफन कॉलेज (1881), हिन्दू कॉलेज (1866), रामजस कॉलेज (1917) आदि उस दौर के महत्त्वपूर्ण स्थापत्य हैं।
- सन् 1911 में नई दिल्ली के देश की नई राजधानी की घोषणा से पहले ब्रिटिश अधिकारी सिविल लाइंस इलाके में रहते थे।

- नई राजधानी या नई दिल्ली के स्थापत्य का काम एडविन लैंडसिर लुटियन और हरबर्ट बेकर को सौंपा गया।
- वाइसरीगल लॉज वायसराय का पहला निवास बना, इसे बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय (1922 ई.) बना दिया गया।
- लुटियन के ज़िम्मे नई दिल्ली शहर एवं गवर्नमेन्ट हाउस और हरबर्ट बेकर के ज़िम्मे सचिवालय के दो हिस्से (नॉर्थ और साउथ ब्लॉक) और काउंसिल हाउस को तैयार करने का भार आया।

राष्ट्रपति भवन (1929 ई.)

- वायसराय पैलेस (अब राष्ट्रपति भवन) के वास्तुकार एडविन लुटियन थे।
- लुटियन के सहयोगी मुख्य इंजीनियर ह्यूज कीलिंग व भारतीय सहयोगियों में हारून अल रशीद, सुजान सिंह और उनके पुत्र शोभा सिंह (अंग्रेज़ी लेखक खुशवंत सिंह के पिता) शामिल थे।
- इस विशाल भवन में चार मंजिलें और 340 कमरे हैं।
- लाल बलुआ पत्थर निर्मित राष्ट्रपति भवन के मुख्य गुम्बद को साँची के बौद्ध स्तूप और जालियों को मुगल स्थापत्य कला की तर्ज पर बनाया गया है।
- राष्ट्रपति भवन की एक अन्य विशेषता इसके स्तंभों में भारतीय मंदिरों की घंटियों का प्रयोग है।
- राष्ट्रपति भवन रायसीना पहाड़ी पर बनाया गया दिल्ली का सबसे उँचा भवन है।

संसद भवन संपदा (1927 ई.)

- इसके अंतर्गत संसद भवन, संसदीय ज्ञानपीठ (ग्रंथालय), संसदीय सौंध और इसके आस-पास के विस्तृत लॉन आदि शामिल हैं।
- इसके वास्तुकार एडविन लुटियन और हरबर्ट बेकर थे और इसे बनाने में 6 वर्ष (1921-27 ई.) लगे।
- इसके विशाल वृत्ताकार क्षेत्र में लोकसभा, राज्यसभा और पूर्ववर्ती ग्रंथालय (पहले यह प्रिंसेस चैम्बर था) है और इनके मध्य उद्यान प्रांगण है।
- केन्द्रीय कक्ष गोलाकार है और इसके 98 फुट व्यास वाले गुम्बद को विश्व के भव्यतम गुम्बदों में से एक माना जाता है।
- 15 अगस्त, 1947 ई. को ब्रिटिश शासन द्वारा भारत को सत्ता हस्तांतरण तथा संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान का निर्माण इसी कक्ष में हुआ था।

इंडिया गेट

- यह एक युद्ध स्मारक है जिसका निर्माण 1931 ई. में प्रथम विश्व युद्ध व अफगान युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में किया गया।
- 43 मीटर उँचे इस विशाल द्वार का निर्माण राजपथ दिल्ली में लाल बलुआ पत्थर से हुआ है, जिसके वास्तुकार लुटियन थे।
- स्थापत्य की दृष्टि से इंडिया गेट की तुलना ट्रिम्फल आर्क, रोम; आर्क द ट्रिम्फे (पेरिस) तथा गेट-वे-ऑफ इंडिया से की गई है।
- कनाट प्लेस (मौजूदा राजीव चौक) का डिज़ाइन 'राबर्ट टोर रसेल' ने तैयार किया था।

अन्य प्रमुख तथ्य

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग

- संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्यरत भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिये प्रमुख संगठन है।
- इसका प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्त्वीय स्थलों और अवशेषों का रख-रखाव करना है।
- 1958 ई. के प्रावधानों के अनुसार यह देश में सभी पुरातत्त्वीय गतिविधियों को विनियमित करता है।

- यह पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 को भी विनियमित करता है।
- राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों, पुरातत्त्वीय स्थलों तथा अवशेषों के रख-रखाव हेतु संपूर्ण देश को 24 मंडलों में विभाजित किया गया है।

स्थापत्य शब्दावलियाँ

- **विहार:** बौद्ध भिक्षुओं का आवास गृह 'विहार' कहलाता है। इसका निर्माण प्राकृतिक रूप से या पहाड़ों को काटकर किया जाता था। सामान्य आकार से बड़े विहार को 'महाविहार' कहते हैं जैसे गुप्तकाल में बना 'नालंदा महाविहार'।
- **चैत्य:** बौद्ध व जैन गुहा मंदिरों को चैत्य कहा गया है।
- **स्तूप:** गोल आधार पर निर्मित पत्थर या ईंट की ठोस गुंबदाकार आकृति स्तूप कहलाती है। इसके ऊपर आध्यात्मिक संप्रभुता का प्रतीक एक दंड एवं छाता होता है।
- **स्तंभ:** पत्थर या धातु की बनी खंभेनुमा आकृति स्तंभ कहलाती है।
- **पैगोडा:** बौद्ध स्तूपों और परतदार आकृति में बने स्तंभों के स्थापत्य के लिये यूरोपीय लोगों ने 'पैगोडा' शब्द का इस्तेमाल किया है।
- **गोथिक शैली:** यह मध्ययुगीन यूरोपीय वास्तु की एक शैली है जिसका जन्म फ्राँस में हुआ था। यूरोप के सैकड़ों गिरजे इसी शैली में बने हैं और इसी शैली में भारत के भी अधिकतर गिरजे निर्मित हैं।
- **इंडो-सारासेनिक शैली:** भारत में अंग्रेज़ों के शासन काल में विकसित हुई ऐसी वास्तुकला जिसमें वास्तुकारों ने भारत के प्राचीन और मध्य काल के इस्लामिक स्थापत्य की विशेषताएँ ग्रहण कीं।

यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल भारतीय स्थल	
स्थल	**वर्ष**
ताजमहल (आगरा, यू.पी.)	1983
आगरे का किला (आगरा, यू.पी.)	1983
अजंता की गुफाएँ (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)	1983
एलोरा की गुफाएँ (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)	1983
कोणार्क का सूर्य मंदिर (पुरी, ओडिशा)	1984
महाबलीपुरम के स्मारक समूह (तमिलनाडु)	1984
गोवा के चर्च एवं कान्वेंट (गोवा)	1986
हम्पी के स्मारक समूह (बेल्लारी, कर्नाटक)	1986
खजुराहो के स्मारक समूह (छतरपुर, म.प्र.)	1986
फतेहपुर सीकरी का किला (आगरा, यू.पी.)	1987
बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर, तमिलनाडु)	1987
पट्टदकल के स्मारक समूह (कर्नाटक)	1987
एलीफैंटा की गुफाएँ (महाराष्ट्र)	1987
साँची का स्तूप (म.प्र.)	1989
कुतुबमीनार एवं संबद्ध स्मारक (दिल्ली)	1993
हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली)	1993

पर्वतीय रेलवे (दार्जिलिंग रेलवे (1999), नीलगिरी माउंटेन (2005) एवं कालका शिमला रेलवे (2008)	1999
महाबोधि मंदिर परिसर (बोधगया, बिहार)	2002
भीमबेटका गुफाएँ (म.प्र.)	2003
चंपानेर-पावानेर पुरातत्त्व पार्क (गुजरात)	2004
छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (मुम्बई, महाराष्ट्र)	2004
दिल्ली का लालकिला	2007
जंतर-मंतर (जयपुर, राजस्थान)	2010
राजस्थान के पर्वतीय किले	2013
रानी की वाव (पाटण, गुजरात)	2014

- * यूनेस्को ने भारत के 32 स्थलों को 'अतुलनीय सार्वभौम महत्त्व' का स्थल मानते हुए उन्हें संरक्षण दिया है। विश्व विरासत स्थलों के संरक्षण एवं देखभाल के लिये सालाना 3.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर उपलब्ध कराए जाते हैं।
- **नोट:** इस सूची में प्राकृतिक वर्ग के 7 स्थलों को नहीं लिखा गया है।

प्रमुख आधुनिक वास्तुविद्

चार्ल्स कोरिया

- इनके नेतृत्व में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम में महात्मा गाँधी स्मारक संग्रहालय, मुम्बई में कंचनजंघा अपार्टमेंट टॉवर, जयपुर में जवाहर कला केंद्र, नवी मुम्बई का योजना निर्माण, बोस्टन में मिट्स ब्रेन और कॉग्निटिव साइंस सेंटर, राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली आदि इमारतें बनीं।
- 1984 में मुम्बई में इन्होंने नगरीय समुदाय की प्रगति एवं पर्यावरणीय सुरक्षा को महत्त्व देने वाले अर्बन डिज़ाइन रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की।
- वास्तुशिल्प क्षेत्र में एक श्रेष्ठ वास्तुविद् के रूप में अपने योगदान के लिये चार्ल्स कोरिया को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है।

हाफिज कॉन्ट्रैक्टर

- हाफिज कॉन्ट्रैक्टर के नेतृत्व में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख प्रोजेक्ट हैं-
  - डीएलएफ अरालियास, गुड़गाँव
  - एनआईसीएमएआर, पुणे
  - इन्फोसिस-बंगलुरू, मंगलौर, मैसूर, त्रिवेन्द्रम, पुणे
  - रजनीश ओशो आश्रम-पुणे
- इन्होंने भारत के सबसे बड़े भवनों इम्पेरियल I एवं II का डिज़ाइन तैयार किया।
- हाफिज कॉन्ट्रैक्टर को 2016 में पद्म विभूषण दिया गया।

लॉरेन्स विल्फ्रेड 'लॉरी' बेकर

- बेकर ने तिरुअनंतपुरम में 'द इंडियन कॉफी हाउस' का डिज़ाइन तैयार किया।
- इन्हें धारणीय एवं ऑर्गेनिक वास्तु निर्माण के कारण गांधी ऑफ आर्किटेक्चर' भी कहा जाता है।
- इन्हें पद्म श्री, यूएनओ हैबिवेट अवार्ड आदि मिला।
- इन्होंने सेंटर फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर रूरल डेवलपमेंट नामक संगठन की स्थापना की।

जोसेफ स्टीन

- ये एक अमेरिकी वास्तुविद् हैं। भारत में रहकर इन्होंने महत्त्वपूर्ण कृतियों के निर्माण में अपना योगदान दिया जैसे-
- नई दिल्ली में त्रिवेणी कला संगम आर्ट्स सेंटर
- केरल में कोझिकोड में भारतीय प्रबंधन संस्थान
- नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर
- नई दिल्ली में श्री धरणी आर्ट गैलरी
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में सार्वजनिक शिक्षा केंद्र तथा केनेडी ऑडीटोरियम।

क्रिस्टोफर चार्ल्स बेनिंगर

- ये एक अमेरिकी-भारतीय वास्तुविद् तथा योजना निर्माणकर्ता हैं।
- इन्होंने विश्व बैंक और मद्रास नगरीय विकास प्राधिकरण के लिये 4 स्थानों पर 20,000 इकाइयों का डिज़ाइन तैयार किया।
- हुडको के सहयोग से इन्होंने हैदराबाद में कम आय वाले परिवारों के लिये टाउनशिप का निर्माण किया।
- श्रीलंका, नेपाल और भूटान में भी इन्होंने कई निर्माण कार्यों को अंजाम दिया।

चार्ल्स एडुवर्ड व्यारेंट (ली कार्बूजियर)

आज़ाद भारत का पहला योजनाबद्ध शहर चंडीगढ़ है जिसके स्थापत्य का श्रेय चार्ल्स एडुवर्ड व्यारेंट अथवा ली कार्बूजियर को जाता है।

ओट्टो कोसिनबर्गर और जूलियस वॉज

भुवनेश्वर शहर को बसाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जर्मन वास्तुकार ओट्टो कोसिनबर्गर और जूलियस वॉज रहे।

फ्रैंक गैरी

ये अमेरिकी वास्तुविद् हैं जिसके नेतृत्व में आंध्र प्रदेश की नवीन राजधानी अमरावती का निर्माण हो रहा है।